

B.A. 6th Semester (Honours) Examination, 2022 (CBCS)

Subject : Sanskrit

Course : CC-XIV

(Sanskrit Composition and Communication)

Time : 3 hours

Full Marks : 60

The figures in the right hand margin indicate full marks.

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

1. अधोनिर्दिष्टेषु प्रश्नेषु दश प्रश्नाः सुरगिरा देवनागरीलिपिमाश्रित्य समाधेयाः। 2×10=20
(नीचेर प्रश्नगुलिर मध्ये १०टि प्रश्नेर उन्नर संस्कृत भाषाय देवनागरी लिपिते दाओ।)
- (क) उक्तकर्मणि का विभक्तिः स्यात्? सूत्रमुल्लिख्य उदाहरणं देयम्।
(उक्त कर्मे कोन् विभक्ति हय? सूत्र उल्लेख करे उदाहरण दाओ।)
- (ख) अनभिहिते कर्तरि का विभक्तिः स्यात्? किं तत्र सूत्रम्?
(अनुक्त कर्ताय कोन् विभक्ति हय? सूत्रट्टाई वा की?)
- (ग) बलिं याचते वसुधाम्—इत्यत्र रेखांकितपदस्य विभक्तिं सकारणं ससूत्रं लिखत।
(बलिं याचते वसुधाम्—एखाने रेखांकित पदेर सूत्रसह विभक्तिर कारण लेख।)
- (घ) यागय याति—इत्यत्र रेखांकितपदस्य विभक्तिं सकारणं ससूत्रं लिखत।
(यागय याति—एखाने रेखांकित पदेर विभक्तिर कारण सूत्रसह लेख।)
- (ङ) 'नटस्य गाथां शृणोति' 'नटात् गाथां शृणोति' चेत्यनयोः वाक्ययोः पार्थक्यं ससूत्रं निरूपणीयम्।
('नटस्य गाथां शृणोति' एवं 'नटात् गाथां शृणोति' दुट्टि वाक्येर पार्थक्य सूत्रसह निरूपण कर।)
- (च) 'पापमभिनिवेशः', 'पापेहभिनिवेशः' चेत्यनयोः भेदः व्याकरणगोक्तदिशा निरूपणीयः।
('पापमभिनिवेशः', 'पापेहभिनिवेशः'—एई दुट्टि वाक्येर भेद व्याकरणदृष्टिते विचार कर।)
- (छ) गतकाल सन्धे १-१५ मिनिते आमि रमाके आश्रमे पड़ते देखेछिलाम। तार सन्धे अन्य केउ छिल ना—इति वाक्यद्वयं संस्कृतेन अनूद्यताम्।
(गतकाल सन्धे १-१५ मिनिते आमि रमाके आश्रमे पड़ते देखेछिलाम। तार सन्धे अन्य केउ छिल ना—एई वाक्यदुट्टिर संस्कृते अनुवाद कर।)
- (ज) तखन सेई युवक राजाके नमस्कार करे बलल—'महाराज! एरपर आमि एखाने থাকते चाई ना'—इति वाक्यं संस्कृतेन अनूद्यताम्?
(तखन सेई युवक राजाके नमस्कार करे बलल—'महाराज! एरपर आमि एखाने থাকते चाई ना'—वाक्यट्टि संस्कृत भाषाय अनुवाद कर।)
- (बा) आधारस्य कर्मद्विविधायकं सूत्रमेकं सोदाहरणं लिख्यताम्।
(आधारेर कर्मद्विविधायक एकट्टि सूत्र उदाहरण सह लेख।)

- (এ৩) কেষু অর্থেষু 'অপি' কর্মপ্রবচনীয়সংজ্ঞকঃ স্যাত্ ?
(কোন কোন অর্থে 'অপি' কর্মপ্রবচনীয় সংজ্ঞা লাভ করে?)
- (ট) 'তাদর্থ্যে চতুর্থী বাচ্যা'—ইতি বার্তিকম্ সোদাহরণং ব্যাখ্যেয়ম্।
(তাদর্থ্যে চতুর্থী বাচ্যা' এই বার্তিকটি সোদাহরণ ব্যাখ্যা কর।)
- (ঠ) 'প্রবমপায়েহপাদানম্' ইতি সূত্রে 'প্রব'-শব্দস্য কোহর্থঃ?
('প্রবমপায়েহপাদানম্'—এই সূত্রে 'প্রব' শব্দের অর্থ লেখ।)
- (ড) 'ল্যব্লোপে কর্মণ্যাধিকরণে চ' ইতি বার্তিকস্য উদাহরণম্ দেয়ম্।
('ল্যব্লোপে কর্মণ্যাধিকরণে চ'—এই বার্তিকের উদাহরণ দাও।)
- (ঢ) 'দিবঃ কর্ম চ' ইতি সূত্রে চকারস্য কোহর্থঃ?
('দিবঃ কর্ম চ' এই সূত্রে 'চ' কারের দ্বারা কী বোঝায়?)
- (ণ) 'যেনাস্তবিকারঃ' ইতি সূত্রস্য উদাহরণং দীয়তাম্।
('যেনাস্তবিকারঃ' এই সূত্রের উদাহরণ দাও।)
2. অধোলিখিতেষু প্রশ্নেষু যথাকামং চতুর্থাং প্রশ্নানামুত্তরং দেয়ম্। তত্র যত্‌কিঞ্চন দ্বিতয়ং সুরগিরা সমাধেয়ম্।
(নিচের যে কোন চারটি প্রশ্নের উত্তর দাও। তার মধ্যে দুটির উত্তর সংস্কৃতে লেখ।) 5×4=20
- (ক) 'তমব্‌গ্রহণং কিম্? গঙ্গায়াং ঘোষঃ' ইতি দীক্ষিতোক্তিঃ ব্যাখ্যাতাম্।
('তমব্‌গ্রহণং কিম্? গঙ্গায়াং ঘোষঃ'—এই দীক্ষিতোক্তিটি ব্যাখ্যা কর।)
- (খ) 'বিভাষেতি যোগবিভাগাদগুণে স্থিয়াঞ্চ ক্‌চিৎ' ইতি ভট্টোজিবচনং বিচার্যতাম্।
('বিভাষেতি যোগবিভাগাদগুণে স্থিয়াঞ্চ ক্‌চিৎ'—ভট্টোজিকৃত বাক্যটি ব্যাখ্যা কর।)
- (গ) 'হেতৌ' ইতি সূত্রং দীক্ষিতোক্তিশা ব্যাখ্যাতাম্।
('হেতৌ' সূত্রটি দীক্ষিতানুসারে ব্যাখ্যা কর।)
- (ঘ) 'ত্রিয়ার্থোপপদস্য চ কর্মণি স্থানিনঃ' ইতি সূত্রং ব্যাখ্যেয়ম্।
('ত্রিয়ার্থোপপদস্য চ কর্মণি স্থানিনঃ'—এই সূত্রটি ব্যাখ্যা কর।)
- (ঙ) ন্যায়াধীশঃ ন্যায়পীঠে উপবিশ্য বাদিপ্রতিবাদিনোঃ কথনং শৃণ্বন্‌ আসীত্‌। তদা তত্র সহসা যুবরাজঃ প্রবিশ্য ক্রোধেন অবদত্‌—'মম সহচরঃ ভবতা কারাগারে স্থাপিত ইতি শ্রুতম্‌। কিমেতত্‌! বিমুচ্যতাং সঃ' ইতি। ন্যায়াধীশেন উক্তম্‌ যত্‌ বিহিতস্য দণ্ডস্য অপাকরণে অধিকারস্ত মহারাজস্য এব। অতঃ এতদ্‌ বিষয়ে মহারাজ এব প্রার্থনীয়ঃ। কিঞ্চ ইদানীং বিচারণা প্রচলতি। তত্র বিদ্বকরণং ন শোভতে। কৃপয়া ইতঃ বহিঃ গম্যতাম্‌ ইতি—(উপরিতনং সন্দর্ভমনুসৃত্য অধোলিখিতাঃ প্রশ্নাঃ সুরগিরা সমাধেয়াঃ।)
(উপরের অনুচ্ছেদ অনুসরণে নিচের প্রশ্নগুলির সংস্কৃতে উত্তর দাও।) 1+2+2=5
- (i) ন্যায়াধীশঃ কুত্র আসীত্‌?

(ii) तत्र युवराजः किमवदत् ?

(iii) तदा न्यायाधीशेन किमुक्तम् ?

(च) कश्चन् राजा स्वस्य गुरोः माहात्म्यं श्लाघमानः सहस्रं गुरवे वस्त्राणि उपायनत्वेन समर्पितवान्। गुरुरपि स्वनिकटे स्थितय कश्चिच्चित् भिक्षुकाय राज्ञा दत्तानि वस्त्राणि दत्त्वा अग्रे गतवान्। परेदपि एतं विषयं ज्ञात्वा राजा गुरुमाहूय अवदत् 'मया भवते उपायनानि दत्तानि। किञ्च भवान् तानि अन्येभ्यः वितरन् अस्ति। किमेतत् उचितम् ? गुरुरवदत्— राजन्। दानं नाम प्रदत्तस्य वस्तुनः सम्पूर्णतया स्वामित्वागस्य अङ्गीकारः। परन्तु अधुनापि कृतस्य दानस्य विषयं स्मरं भवान् तद् विषये मां पृच्छन्स्ति। एवं तर्हि भवान् दानफलं न प्राप्स्यति—(इति अनुच्छेदं मनसि निधाय निम्नोक्तानां प्रश्नानामुत्तरं सुरगिरा देयम्।)

(आलोच्य सन्दर्भ अनुसरणपूर्वक निचेर प्रश्नগুলির উত্তর সংস্কৃते লেখ।)

1+1+1+2=5

(i) केनचित् राज्ञा किं कृतम् ?

(ii) गुरुरपि किं कृतवान् ?

(iii) तदनु गुरुकर्म ज्ञात्वा राजा किमवदत् ?

(iv) दानस्य तात्पर्यं किम् ?

3. अधोलिखितयोः प्रश्नयोः अन्यतरस्य उत्तरं देयम्।

(नीचेर ये कोन एकटिर उत्तर दाओ)

10

(क) प्रतिपदव्यावृत्तिपूर्वकं कर्मकारकपरामर्शकं प्रधानं सूत्रं सोदाहरणं दीक्षितोक्तदिशा व्याख्यायताम्।

(प्रतिपदेर सार्थकता विचारपूर्वक कर्मकारकेर प्रधान सूत्रेति दीक्षितानुसारी सोदाहरण व्याख्या कर।)

(ख) किं नाम प्रातिपदिकम् ? को वा प्रातिपदिकार्थः ? 'लिङ्मात्राधिक्ये संख्यामात्रे च प्रथमा स्यात्' इति दीक्षितोक्ति व्याख्याया।

(प्रातिपदिक बलते की बोवा ? प्रातिपदिकार्थे वा की ? 'लिङ्मात्राधिक्ये संख्यामात्रे च प्रथमा स्यात्'—एइ दीक्षितोक्ति वि व्याख्या कर।)

4. अधोलिखितयोः प्रश्नयोः अन्यतरः समाधेयः।

(निचेर प्रश्नदुटिर ये कोन एकटिर उत्तर दाओ।)

10

(क) 'अनलाइनद्वारेण परीक्षा' इति विषयमाधारीकृत्य काचन विवरणी सुरगिरा लेखनीया।

(अनलाइन परीक्षा विषये एकटि रिपोर्ट संस्कृते लेख।)

(ख) तव महाविद्यालये २६/१/२०२२ इति दिनाङ्के सांस्कृतिकानुष्ठानम् इति विषये किञ्चन विवरणम् संस्कृतेन उपस्थापनीयम्।

(तोमार महाविद्यालये २६/१/२०२२ तारिखे सांस्कृतिक अनुष्ठान विषये एकटि रिपोर्ट संस्कृते लेख।)